वेदों व पुराणों के
आधार पर

धार्मिक एकता की ज्योति

लेखक : डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय

वेदों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति

डा. वेद प्रकाश उपाध्याय
(एम.ए.)

- संस्कृत काव्य रचना प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता
- संस्कृत निबन्ध रचना प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता (प्रयाग विश्वविद्यालय)
- अन्तविश्वविद्यालयीय संस्कृत वादविवाद प्रतियोगिता के रजतफलक विजेता (विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन)
- सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ संचालक
- संस्कृत विभागाध्यक्ष, पंजाब यूनिवर्सिटी

विश्व एकता के प्रयास

मुजफफर उल्ला खाँ
अंगूरी बाग, रामपुर

विश्व व्यापक स्तर पर आज मानवता का हर प्रकार से शोषण किया जा रहा है। जैसे जैसे मानव के भौतिकवादी स्वरुप का विकास हो रहा है वैसे वैसे उसका नैतिक एरां चारित्रिक पतन भी तेजी से हो रहा है। अपने स्वार्थ के लिए मानव सभी मर्यादाओं को लांघ कर हिंसक पशु से भी अधिक क्रूरता पूर्ण रुप धारण करता चला जा रहा है। ऐसे निराश भरे वातावरण में जबकि शांति एरां सद्भाव के भी प्रयास विफल हो चुके हैं, सिर्फ धर्म एक मात्र सहारा रह गया है। विभिन्न धर्मों में बँटी मानव जाति की पीड़ा का अनुभव करके उसको परमेश्वर के सनातन काल से चले आ रहे एक ही शाश्वत धर्म का परिचय कराने के लिए वैदिक ज्ञान के प्रख्यात विद्वान पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने इस्लाम और वैदिक धर्म का अध्ययन किया तो उन्हें एक ही सत्य के दर्शन हुए। इस पुस्तक 'धार्मिक एकता की ज्योति' में श्री उपाध्याय जी ने हिन्दू धर्म ग्रन्थों में हज़रत नूह (अलै.) मुहम्मद साहब, ईसा मसीह, आदम और हव्वा एरां अल्ला आदि के दिये गये विवरण प्रस्तुत कर एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

विश्व एकता प्रकाशन अपने सीमित साधनों के बावजूद धार्मिक एकता पर आधारित दुलर्भ ग्रन्थों के प्रकाशन का सार्थक प्रयास कर रहा है। पं. वेद प्रकाश उपाध्याय जी के विशेष आग्रह पर हम इस पुस्तक का प्रकाशन आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

धर्म के सच्चे स्वरुप से अनभिज्ञ लोग अन्धे गुरु के अनुकरणकारी अन्धे शिष्य की भांति अन्धे कूप (नरक) में ही गिरते हैं, अत: गिरने से बचने के लिए धर्म के सत्य स्वरुप का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान उपलब्ध कहाँ से होगा? धर्म के मूल स्त्रोतों से। ये स्त्रोत हैं ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले पवित्र ग्रन्थ जो मन्त्रदृष्टा ऋषियों द्वारा ध्यान एवं आकाशवाणी से प्राप्त मन्त्रों के संग्रह हैं। प्रत्यक्ष एवं अनुमान से जिन पदार्थों का ज्ञान नहीं होता, उन्हें ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थों से जाना जाता है-वे ग्रन्थ हैं वेद, बाइबिल एवं कुरआन, जिन पर सनातन, ईसाई एरां इस्लाम धर्म आधारित हैं।

तीनों पवित्र एवं ईश्वरीय ग्रन्थ हैं, अत: तीनों में सिध्दान्तत: भी वैषम्य होना असम्भव है। वेद सर्व-प्राचीन एवं जगत् के सर्वप्रथम ग्रन्थ हैं, उनके बाद ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, तथा पुराणों की गणना होती है। ये ग्रन्थ आदम के पूर्ववर्ती देवर्षियों द्वारा लिखे गये थे। देवर्षि नारद-रचित भक्तिसूत्र आज भी उपलब्ध है। भविष्य-पुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी सूत द्वारा वर्णित भावी वृत्तान्त उपलब्ध है। भविष्य-पुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी सूत द्वारा वर्णित भावी वृतान्त (आदम एरां हव्यवती वृत्तान्त) को सुनाते हैं जिसका वर्णन आगे किया जाएगा। आदम काल से पूर्व का चरित्र मानवेतर अर्थात् देवो तथा राक्षसों का चरित्र है, जिस पर मनुष्य की बुद्धी नहीं ठहरती और उन देव चरित्रों (राम, हनुमान, शंकर तथा कृष्णादि के चरित्रों) में मानवबुद्धी असंगति देखती हैं, जब कि देवों तथा असुरों के लिए ऐसे चरित्र सर्वथा सम्भव हैं। भविष्य में आदम की सन्तानों का पृथ्वी पर अधिकार होगा, यह जानकर अठ्ठासी हजार ऋषि पहाड़ों में चले जाते हैं। इसकी पुष्टि भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व चतुर्थ अध्याय में आए हुए अधोलिखित श्लोकों से होती है-

आर्यदेशा क्षीणवन्तो म्लेच्छवंशा बलान्विता।
भविष्यन्ति भृगुश्रेष्ठ तस्माच्च तुहिनाचलम्।
गत्वा विष्णुं समाराध्य गमिष्यामो हरे: पदम्।
इति श्रुत्वा द्विजा: सर्वे नैमिषारण्यवासिन:।
अष्टाशीति सहस्राणि गतास्ते तुहिनाचलम्।

भविष्य पुराण में आदम के बाद जो ईश दूतत्व की एक एकतान्ता उपलब्ध होती है, वही भविष्य में ह्रीक उसी प्रकार घटीत हुई और परवर्ती धर्म ग्रन्थों बाईबिल एरां कुरआन से उस पर वृहत प्रकाश पड़ा।

बाइबिल एरां कुरआन में जो भी ईश दूतत्व के विषय में वर्णन हुआ वह व्यास जी द्वारा भावी आदम एरां हव्यवती वृत्तान्त के पहले ही व्यक्त कर दिया गया। मन: शृणु ततो गाथा, भावी सूतेन वर्णिताम। कलेर्युगस्य पूर्णा तां तच्छुत्वा तृप्तिमावह अर्थात 'हे मन, सूत द्वारा वर्णित भविष्य में होने वाली कलियुग की उस पूर्ण गाथा को सुनो और तृप्ति प्राप्त करो इतना कहकर आदम और हव्यवती की कथा का प्रारम्भ करते है जो भविष्य में होगी। वेदों का एकेश्वरवाद, भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व में वर्णित ईशदूतत्व एरां न्यूह के समय जल-प्लावन का आना तथा आदम के पहले देवों और असुरों की सत्ता का होना और उनके २ पारस्परिक युद्ध उनके लिये भी ईश्वरीय नियम का विधान तथा यज्ञादि करना ब्राम्हण ग्रन्थों से सिद्ध है जैसे देवताओ ने दर्श तथा पौर्णिमास योगों द्वारा भी असुरों को मास के कृष्ण पक्षको छोड़ देने पर बाध्य किया था, जिस पर असुरों

का अधिकार था (शब्रा ०१. ७.२, २२-४, तैब्रा ०१.५.६.३.४) तथा देवताओं ने असुरों के तीन दुर्गों को, जो लोहा, चांदी और स्वर्ण के बने थे, उपसद् कृत्यों द्वारा ध्सवस्त किया, (तैसं ०६.२.३.१, मैसं ०३.८.१, शब्रा ०३.४.४,३.५, कौब्रा ०८.८)। भविष्य पुराण में कहीं-कहीं इस्लाम धर्म के लिए नैगम धर्मम (वैदिक धर्म) कहा गया है। भविष्य पुराण में जहाँ ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म को म्लेच्छ धर्म कहा गया है, वहीं पर म्लेच्छ शब्द का अर्थ भी समझाया है।

आचारश्य विवेकश्च द्विजता देवपूजनम् ।
कृतान्येतानि तेनैव तस्मान्म्लेच्छः स्मृतो बुधैः ।।
विष्णुभक्त्यग्रि पूजा च हाहिंसा च तपो दमः।
धर्माण्येतानि मुनिभिर्म्लेंच्छानां हि स्मृतानि वै।।

सदाचार, ऊचाँ ज्ञान, ब्राम्हणत्व, देवपूजन (दिव्य परमात्मा की पूजा) हनूक नामक ईश दूत के द्वारा किये गये इसी से उसे विद्वानों ने म्लेच्छ कहा। विष्णु की भक्ति, प्रकाशक परमात्मा की पूजा, अहिंसा, तपस्या, इन्द्रियदमन ये धर्म मुनियों ने म्लेच्छों के बताए हैं।

अब हम वेदों का एकेश्वरवाद एरां पुराणों में वर्णित ईशदूतत्व तथा सार्वभौम धर्म का प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

लेखक-प. वेद प्रकाश उपाध्याय
एम.ए. (संस्कृत वेद)

एकेश्वर वाद

चराचर जगत में चैतन्य रुप से व्याप्त ईश्वर की सत्ता का वर्णन ऋग्वेद में अनेक रुपों में प्राप्त होता है। कुछ वेदविशारदों ने अनेक देववाद का प्रतिपादन करके ऋग्वेद को अनेकदेववादी बना दिया है और कुछ लोग ऋग्वेद में उपलब्ध अनेक रुपों में अनेक नाम एरां उन नामों के गुणों का अवलोकन करके अनेक सर्वोत्कृष्ट देवताओं की कल्पना करते हैं। यह केवल ऋग्वेद का पूर्णतया अनुशीतल न करने पर होता है। वास्तव में सत्ता एक ही है, जिसका अनेक सूक्तों में अनेकधा वर्णन प्राप्त होता है।

इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, गरुत्मान, यम और मातारिश्वा आदि नामों से एक ही सत्ता का वर्णन ब्राह्मनियों द्वारा अनेक प्रकार से किया गया है :-

इन्द्रं मित्रं वरुणामग्निमाहुरथे दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातारिश्वानमाहुः।।

(ऋग्वेद मंडल १०/सूक्त ११४/मन्त्र ५)

वेदान्त में कहा गया है कि एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति, नेह नानास्ति किञ्चन् अर्थात परमेश्वर एक है, उसके अतिरिक्त दूसरा नहीं।

परमेश्वर प्रकाशकों का प्रकाशक, सज्जनों की इच्छा पूर्ण करने वाला, स्वामी, विष्णु (व्यापक), बहुतों से स्तुत, नमस्करणीय, मन्त्रों का स्वामी, धनवान, ब्रह्मा (सबसे बड़ा), विविध पदार्थों का सृष्टा तथा विभिन्न बुद्धियों में रहने वाला है, जैसा कि ऋग्वेद २/१/३ से पुष्ट होता है-

''त्वमग्नो इन्द्रो वृषभः सतामसि, त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः।

त्वं ब्रह्मा रयिबिद् ब्रह्मणास्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ।।

अधोलिखित मन्त्रं में परमेश्वर को द्युलोक का रक्षक, शंकर मरुतों के बल का आधार, अन्नदाता, तेजस्वी, वायु के माध्यम से सर्वत्रगामी, कल्याणकारी, पूषा (पोषण करने वाला) पूजा करने वाले की रक्षा करने वाला कहा गया है-

''त्वमग्ने रुद्रो असुरो महोदिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।

त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस्त्वं पूषा विधतः पासि नुत्मना।।'' (ऋग्वेद मं २/सू.१/ मं .६)

परमेश्वर स्त्रोता को धन देने वाला है, रत्न धारण करने वाला (सविता) प्रेरक देव है। वह मनुष्यों का पालन करने वाला, भजनीय, धनों का स्वामी, घर में पूजा करने वाले की रक्षा करने वाला है। इसके प्रमाण में ऋग्वेद मंडल २, सू .१, मं. ७ प्रस्तुत है-

''त्वमग्ने द्रविणोदा अरकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि।

त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत् ।।''

इस मन्त्र में प्रयुक्त अग्नि शब्द अंज (प्रकाशित होना) + नी (ले जाना) + क्विप् प्रत्यय से निष्पन्न हो कर प्रकाशक परमेश्वर का

अर्थ निष्पादक है। नृपति शब्द नृ (मनुष्य) + पा रक्षा करना + 'डति' प्रत्यय से बनकर 'मनुष्यों' का पालक अर्थ देता है। इसी प्रकार प्रेरणार्थक 'सु' धातु में तृच् प्रत्ययान्त 'सु' प्रत्यय से प्रेरक अर्थ सविता शब्द से निष्पादित होता है।

सभी के मन में प्रविष्ट होकर जो सब के अन्त:करण की बात जानता है, वह सत्ता ईश्वर एक ही है। इसका प्रतिपादन अथर्ववेद (१०/८/२८) में एको ह देवों मनसि प्रविष्ट: कथन से किया गया है।

ऋग्वेद में प्रतिपादित एकं सत् के विषय में कृष्ण यजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद् (६-२१) में वृहत् विवेचन किया गया है-वह एक है, सभी प्राणियों का अन्तर्याती परमात्मा है, सभी प्राणियों के अन्दर व्याप्त है, सर्वव्यापक है, कर्मो का अधिष्ठाता है, सभी का आश्रय है, साक्षी है, चेतन है तथा गुणातीत है-

एकोदेव: सर्वभूतेषु गुढ: सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।

कर्माध्यक्ष: सर्वभूताधिवास: साक्षी चेताकेवलो निर्गुणश्च।। (श्वेता. अध्याय ६, मं. ११)

उस ब्रह्मा के विषय में कुछ लोग कहते है कि वह है, कुछ लोग कहते है की वह नहीं है, वही अपने अरि की सम्पदाओं को विजयी की तरह विनष्ट करता है। उसके अरि वही हैं जो उसे नहीं मानते। इस बात का प्रतिपादन ऋग्वेद मं.२, सू.१२, मं.५ में हुआ हैं-

यच्छोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिंद श्रुतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं बिद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

(उपनिषद)

जो कान से नहीं सुनता अपितु जिसके कारण सुनने की शक्ति है, उसी को बह्म समझो, वह ब्रह्म नहीं है जिसकी उपासना करते हो।

य स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर, मुतेमाहुनैषो असतीत्येनम्।

सो अर्य: पुष्टीविज इराामिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्र।।

वह परमात्मा समृद्ध का, दरिद्र का याचना करते हुए मन्त्र स्त्रोता का प्रेरक है। उसी की कृपा से धन मिलता है, उसी के कोप से मनुष्य अपनी समृद्धियों से हीन होता है।

डगमगाती हुई पृथ्वी को एरां चंचल पर्वतों को स्थिर करने वाला, विस्तृत अन्तरिक्ष को निर्मित करने वाला तथा द्युलोक का स्तम्भन करने वाला परमेश्वर है। इसके प्रमाण में ऋग्वेद मं.२, सू.२१, मं.२ प्रस्तुत है-

''य: पृथिवी व्यथामनामद्दं हद् य: पर्वतान् प्रकृपिताँ अरम्णाव्।

यो अन्तरिक्ष विमम वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्र:।।

ऋग्वेद में अग्निसूक्त, इन्द्र सूक्त, वरुण सूक्त, यम सूक्त, विष्णु सूक्त, विष आदि में जिस सत्ता की महिमा का गुणगाप हुआ है वही सत्ता ईश्वर है। उस का ग्रहण लोग अनेक प्रकार से करते है। कोई उसे शिव मानता है, कोई शक्ती, कोई ब्रह्म कोई बुद्ध मानता है, कोई उसे कर्त्ता कोई उसे अर्हत् मानता है, कोई कर्म के रुप में मानता हैं। एक को अनेक रुपों में भिन्न-भिन्न मानना सबसे बड़ा विभेद है, और ऐसा करना वेदों के अर्थ का अनर्थ करना है तथा यह आर्य धर्म के विरुद्ध है। देवी हो या देव, नर हो या नारी अच्छा हो या बुरा चराचर जगत् में चेतनता रुप में ईश्वर जगत् में व्याप्त न हो तो जगत् का क्रिया-कलाप ही स्थगित हो जाय। जो मनुष्य शुद्ध अन्त:करण का है, एरां विकारों से रहित है, उसके अन्दर उस परमानदमयी सत्ता का प्रकाश रहता है। इसलिए उस ईश्वर को कण कण में अनुभव करना चाहिए एरां सदाचार और उस निष्ठा से उस प्राप्त करने का प्रयत्न भी करना चाहिये।

ईशदूतत्व की पुराण से पुष्टि

मन्त्रों के साक्षात्कार करने वाले ऋषि कहे जाते है। (अल्पभाषी एरां संसार से उदासीन रहकर उन्हें तत्वदर्शिता प्राप्त होती है।) ऋषियों ने मन्त्रों को बनाया नहीं, अपितु इन्हें परमेश्वर से प्राप्त किया। यदि किसी को इसमें अविश्वास हो, तो वेदों के मन्त्र की तुलना में कोई अन्य मन्त्र बना दे। ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले जितने भी ग्रन्थ है उनकी तुलना में ग्रन्थों की रचना मनुष्य के बुद्धि की बात नहीं अपितु वह ईश्वरीय अनुकम्पा के फलस्वरुप ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार वेद बाइबिल एरां कुरआन की तुलना में अन्य ग्रन्थ नहीं बन सकते हैं। (और इन्ही का वृहद् विवेचन पुराण हैं।)

भविष्य पुराण में वेदव्यास जी नारायण वर्णित आदम और हव्यवती वृन्तान्त इस प्रकार है-

आदमो नाम पुरुषः पत्नी हव्यवती स्मृता।
विष्णुकर्दमतो जातो म्लेच्छवंशप्रवर्धनौ।।
द्विशताष्टासहस्रे द्वे शेषे तु द्वापरे युगे।
म्लेच्छदेशस्य या भूमिर्भविता कीर्तिमालिनी।।
इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यान परायणः।
तस्मादादनामासों पत्नी हव्यवती स्मृता।।
प्रदाननगरस्यैव पूर्वभागे महावनम्।
इश्वरेण कृतं रम्यं चतुः क्रोशायंत स्मृतम्।
पापवृक्षतले गत्वा पत्नीदर्शनतत्परः।
कलिस्तत्रागतस्तूर्ण सर्परुपं हि तत्कृतम्।।
वंचिता तेन धूर्तेन विष्णवाज्ञा भगंतांगता।
खादित्वा तत्फलं रम्यं लोकमार्गप्रदं पतिः।।
उदुम्बरस्थ पत्रैश्च ताम्यां वाय्वशनं कृतम।
सुताः पुत्रास्ततो जाताः सर्वे म्लेच्छा वभूविरे।।
त्रिशोत्तरं नवशतं तस्यायुः परिकीर्तितम्।
फलानां हवनं कुर्वन्पत्न्या सह दिवं गतः।।

(भविष्य व य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय)

द्वापर युग में दो हजार आङ्ग सौ दो वर्ष शेष रहने पर म्लेच्छ देश की जो भूमि है वह यशस्विनी हो जाएगी। इन्द्रियों का दमन करके परमात्मा के ध्यान में परायण होने के कारण म्लेच्छों के वंशवर्धक आदम तथा हव्यवती (भोगों से युक्त) विष्णु की गीली मिट्टी से उत्पन्न होंगे। स्वर्ग प्रदाननगर के पूर्वी भाग में परमेश्वर द्वारा बनाया गया सुन्दर चार कोश के क्षेत्र का बहुत बड़ा वन था। पापवृक्ष के नीचे जाकर पत्नी को देखने की उत्कण्ङ्गा से आदम हव्यवती के पास गये तभी सर्प का रुप बनाकर वहॉ कलि शीघ्र आया। उस धूर्त के द्वारा आदम और हव्यवती ङ्बग लिए गए और विष्णु की आज्ञा को भग कर दिया तथा संसार का मार्ग के पास गए। तभी सर्प का रुप बनाकर वहां कलिशीघ्र आया। उस धूर्त के द्धरा आदम और हव्यवती प्रदान करने वाले उस फल को पति ने खा लिया। उन दोनों के द्वारा गूलर के पत्तों से वायु का आहार किया गया, तब उन दोनों से बहुत सी सन्ताने उत्पन्न हुई, सब म्लेच्छ कहे गये। (आदम की आयु नौ सौ तीस वर्ष हुई।) फलों हवन करते हुये पत्नी के साथ आदम स्वर्ग चले गये।'

इस प्रकार आदम और हव्यवती के वृत्तान्त की समाप्ति के बाद उसी में परवर्ती ईशदूतों को वर्णन बड़े ही मनोरम ढंग से हुआ

है। वह इस प्रकार है-

तस्माज्जात: सुत: श्रेष्ट: श्वेतनामेति यिश्रुत:।
द्वादशोत्तरयर्ष च तस्यायु: परिकीर्तितम।।
अनुहस्तस्य तनय: शतहीनं कृतं पदम।
कीनाशस्तस्यतनय: पितामहसमं पदम।।
महल्ललस्तस्य सुत: पंचहीनं शतं नय।
तेन राज्यं कृतं तत्र तस्मान्मानगरं स्मृतम।।
तस्माच्च विरदो जातो राज्यं षष्ट् युत्तरं समा:।
ज्ञेयं नवशतं तस्य स्यनाम्ना नगरं स्मतम।।
हनूकस्तस्य तनयो विष्णुभक्तिपरायण:।
फलानां हवनं कुर्वन् तत्व ह्सि जयन सदा।।
त्रिशतं पंचषष्टिश्च राज्यं वर्षाणि तत्स्मतम।
सदेह: स्वर्गमायातो म्लेच्छधर्मपरायण:।।
मतोच्छिलस्तस्य सुतो हनूकस्यैव भार्गव।
राज्यं नवशतं तस्य सप्ततिश्च स्मृता: समा:।।
लोमकस्तस्य तनयो राज्यं सप्तशतं समा:।
सप्तसप्ततिरेवास्य तत्पश्चात्स्वर्गतिंगत:।

आदम से श्रेष्ठ सन्तान हुई जो श्वेत नाम से विख्यत हुई, उसकी आयु नौ सौ बारह वर्ष हुई। उसका तनय अनुह हुआ जो ईश्वर दूतत्व के पद को सौ वर्ष से कम समय तक धारण किया। उसका तनय कीनाश हुआ, जो पितामह बाबा के सम्मान पद धारण किया। उसका पुत्र महल्लल हुआ जिसने आङ्ग सौ पंचानवे वर्ष तक राज्य किया, उनसे मानगर बना। उससे विरद हुए, जिसने नौ सौ आङ्ग वर्ष तक राज्य किया, उसके अपने नाम से नगर बने। उसका पुत्र हलूक विष्णु भक्ति में परायण हो गया। फलों का हवन करते हुए तत्वमसि पर विवेक किया। उसका राज्य तीन सौ पैंसङ्ग वर्ष तक रहा। म्लेच्छ धर्म में परायण होकर वह संदेह स्वर्ग को आया। हे भार्गव। उस हनूक का पुत्र मतोच्छिल हुआ उसका राज्य नौ सौ सत्तर वर्ष रहा। उसका पुत्र लोमक हुआ, राज्य उसका सात सौ सतहत्तर ७७७ वर्ष तक रहा, उसके बाद स्वर्ग को चला गया। इसी कथा का आगे वर्णन इस प्रकार है-

तस्माज्जत : सुतो न्युहो निर्गतस्तूह एरा स:।
तस्मान्न्यूह: स्मृत: प्राज्ञै: राज्यं पञ् चशतंकृतम।।
सीम: शमश्च भावश्च त्रय पुत्रा बभूविरे।
न्यूह: स्मृतो विष्णु भक्तस्सोऽहंध्यानपरायण:।।
एकदा भगवान विष्णुस्तत्स्वप्ने तु समागत:।
वत्स न्यूह शृणष्वेदं प्रलय: सप्तमेऽहनि।
भविता त्वं जनैस्सार्द्ध नावमारुह्य सत्वरम।
जीवनं कुरु भक्तेन्द्र सर्वश्रेष्ठो भविष्यसि।।
तथेति मत्वा स मुनिर्नाव कृत्वा सुपुष्ठिताम।
हस्तत्रिशतलम्बां च पञ् चाशद्धस्तविस्तृताम।
त्रिशद्धस्तोच्छृतां रम्यां सर्वजीवसमन्विताम।
आरुह्य स्वकुलैस्सार्द्ध विष्णुध्यानपरोऽभवत् ।।

उससे न्यूह नामक पुत्र हुआ। उसने पांच सौ वर्ष राज्य किया। उसके सीम, शम और भाव तीन पुत्र हुए, विष्णु का भक्त न्यूह सोऽहमस्मि ध्यान में परायण था। एक बार भगवान विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि हे प्रिय न्यूह सुनो सातवें दिन प्रलय होगी। तुम लोगों के साथ नाव में शीघ्र बैङ्ग जाना, हे भक्तेन्द्र, अपना जीवन बचाओ, तुम सर्वश्रेष्ठ हो जाओगे। वैसा स्वीकार करके उस मुनि ने तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ चौड़ी नाव का निर्माण कराया तीस सौ हाथ ऊपर उङ्गी हुई (ऊंची) सुन्दर सभी जीवों के जोड़े तथा अपने कुल वालों के साथ चढ़कर विष्णु के ध्यान में तत्पर हो गया।

यहॉ महाजल प्लावन की भीषणता का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

सांवर्तको मेघगणो महेन्द्रेण समन्वित:।
चत्वारिशद्दिनान्येव महावृष्टिमकारयत।।
सर्व तु भारतं वर्ष जलै: प्लाव्य तु सिन्धव:।
चत्वारो मिलित: सर्वे विशालायां न चागता:।।
अष्टशीति सहस्त्राणि? (सहर्वाणि) मुनयो ब्रह्मवादिन:।

न्यूहश्च स्वकुलेस्सार्ध्द शेषा: सर्वे विनाशिता।।
यदा तु मुनयस्सर्वे विष्णुमाणां प्रतुष्टुवु:।।
न्युहस्तब्रस्थितो नावमारुह्य स्वकुलैस्सह।
जलान्ते भूमिमागत्य तत्र वामं करोत स:।।
सिमश्च हामश्च तथा याकूतो नाम विश्रुत:।
याकूत: सप्तपुत्रश्च जुम्रो माजूज एरां स:।।
मादी तथा च यूनानस्तूवलो मसकस्तथा।
तीरासश्च तथा तेषां नामभिर्देश उच्यते।।
जुम्रा दश कनाब्जश्च रिफतश्च तजर्रुम:।
तद्याम्न च स्मृता देशा यूनाद्या ये सुता: स्मृता:।।
इलीशस्तरलीशश्रच कित्तीहूदानिरुच्यते।

सांवर्तक नाम मेघों के गणने इन्द्र से युक्त होकर (चालीस दिनों तर महान वृष्टि की। सम्पूर्ण भारतवर्ष जल से डूब गया, और चार समुद्र मिल गए और विशाल हो गए। अठ्ठासी हजार? (सहर्ष) ब्रह्मवादी मुनि न्यूह अपने कुलों के साथ जल के अन्त होने पर वहां वास करने लगा। न्यूह के पुत्र सिम, हाम, याकूत नाम से प्रसिद्ध हुए।) याकूत के सात पुत्र हुए- जुम्र, माजूज, मादी, यूनान, तूवल, मसक तथा तीरास। उन्हीं के नामों से देश कहे जाते हैं। जुम्र के बाद १० हुए-कनाब्ज, रिफ्त, तजर्रुम- इनके नाम से देश बने जो यूनादि पुत्र हुए। इलीश, तरलीश, कित्ती, हुदानि कहे जाते हैं।

चतुर्भिर्नामभिर्देशास्तेषां तेषां प्रचक्रिरे।
द्वितीयतनयाद्धामात्सुनाश्चत्वार एरां ते।
कुशो मिश्रश्च कूजश च कनआँस्तत्र नाममि:।।
तथा सवतिका नाम निमरुहो महाबल:।
तेषां पुत्राश च कलन: सिनारोरक उच्यते।।
अक्वदो बावुनश्चैव रसनादेशकाश्चते।
श्रावयित्वा मुनीम् सूतो योगनिद्रा वशगंत:।।

इन चारो के नाम से देश कहे जाते हैं। द्वितीय पुत्र हाम से चार पुत्र हुए कुश, मित्र कूज तथा कनआन् । इनसे म्लेच्छों के प्रसिद्ध देश हैं। कुश के छ: पुत्र हुए-हबील, सर्वतोरग, सवतिका, निमरुह, कलन और सिनारोरक कहे जाते हैं। इसके अतिरिक्त अक्वद, बाबुन और रसनादेशकादि। इस प्रकार सूत जी मुनियों को सुनाकर योगनिद्रा के वशीभूत हुए।

द्विसहस्त्रे शताब्द न्ते बुद्धा पुनरथाब्रवीत् ।
सिमवंशं प्रवक्ष्यामि सिमो ज्येष्ठ: स भूपति।
राज्यं पञ् चशतं वर्ष तेन म्लेच्छेन सत्कृतम् ।।
अर्कसदरतस्य सुतश्रच्तुस्त्रिशच्च राज्यकम।।
चतुश्शतं पुनज्ञे यं सिल्हास्तत्तनयोऽभवत् ।
राज्यं तस्य स्मृतं तत्र षष्ट् युत्तरचतु: शतम् ।।
इरातस्य सुतोज्ञेय य: पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।
कलजतस्य तनय: चत्वारि शंदद्वयं शतम् ।।
राज्यं कृतंतु तस्माच्च रऊनाम सुत: स्मृत:।
सप्तत्रिशच्च द्विशतं तस्य राज्यं प्रकीतितम् ।।
तस्माच्च जूज उत्पन्न: पितुस्तुल्वं कृतं पदम् ।
नहूरस्तस्य तनयो वय: षष्टयुत्तरंशतम् ।।
राज्य चकार नृपतिर्बहुशवून् विहिंसयन् ।
ताहरस्तस्य तनय: पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।।
तस्नात्पुत्रोऽविरामच्श्र नहूरो हारनस्त्रयं: ।
एरां ऐषां स्मृता वंशा नाममात्रेण कीर्तिता:।।

दो हजार एक सौ वर्ष बीतने पर जागकर फिर बोले सिम के वंश को बताऊंगा। ज्येष्ठ पुत्र सिम राजा हुआ, उस म्लेच्छ ने पांच सौ वर्ष तक राज्य किया। उसका पुत्र अर्कसद जिसने चार सौ चौतिस वर्ष राज्य किया, फिर सिंह उनका पुत्र हुआ, जिसने चार सौ साङ्ग वर्षे तक राज्य किया। इब्रत के पुत्र ने भी पिता के तुल्य पद को शोभित किया, उसके पुत्र ने दो सौ चालीस वर्ष तक राज्य किया। इसी से रऊ नामक पुत्र हुआ। रऊ ने दो सौ सैंतीस वर्ष तक राज्य किया, उससे जूज उत्पन्न हुआ, उसने भी पिता के समान पद को शोभित किया। उसका पुत्र नहूर हुआ, जिसने एक सौ आङ्ग वर्ष राज्य किया और बहुत से शत्रुओं का संहार किया। उसका पुत्र ताहर हुआ जिसने पिता के सम्मान पद को शोभित किया। उसके पुत्र तीन-

अविराम, नहूर और हारन, इस प्रकार म्लेच्छवंश के गुरु होंगे। और बाद में भारत के राजाओं (शकराज और भोज) ने समय-समय पर जाकर क्रमशः ईशामसीह और महामद जी से धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। (भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय)

पुराणों में यीशु विषयक वर्णन

इब्राहीम (अबिराम) का विवरण होने के बाद यीशू का वर्णन भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खन्ड, द्वितीय अध्याय में इस प्रकार किया गया है-

एकदा तु शकाधीशो हिमतुगं समाययौ। २१
हूणादेशस्य मध्ये वै गिरिस्थं पुरुषं शुभम् ।।
ददर्श बलवान् राजा गौरागं श्वेतवस्त्रकम।।२२
को भवानिति तं प्राह स होवाच मुदान्वितः।
(ईशं पुत्रम पाठभेद) ईशपुत्र च मांविाद्वि कुमारी गर्धसम्भवम।।२३
म्लेच्छधर्मस्य वक्तारं सत्यवृतपरायणम।
इति श्रृत्वा नृपः प्राह धर्मः को भवतः मतः।।२४

एक बार शाकाधीश हिमतुंग पर गए और हूण देश के मध्य पर्वत में स्थित गोर अंग वाले, श्वेत वस्त्र पहनने वाले शुभ पुरुष को बलवान राजा ने देखा और अनन्दित होकर पूजा कि आप कौन हैं? उन्होंने कहा कि मुझे कुमारी के गर्भ से उत्पन्न ईशा समझें, मैं सत्य के व्रत में परायण म्लेच्छधर्म का उपदेशक हूं। ऐसा सुनकर राजा ने पूछा में आपका क्या विचार है।

श्रुत्वोवाच महाराज प्राप्ते सत्यस्य संक्षये।
निर्मार्यादे म्लेच्छदेशे मसीहोऽह समागतः।।२५
ईशामसी च दस्यू नां प्रादुर्भूता भयंकरी।
तामहं म्लेच्छतः प्राप्य मसीहत्वमुपागतः।।२६
म्लेच्छेषु स्थापितो धर्मो मया तच्छणु भूषते
मानसंनिर्मलं कृत्वा मलं देहे शुभाशुभम ।।२७
नैगम जपमास्थाय जपेत निर्मलं परम।
न्यायेन सत्यवचसा मनसैक्येन मानवः ।।२८
ध्यानेन पूजयेदीशं सूर्यमन्डलसंस्थितम।
अचालोऽयं प्रभुः साक्षात्तथा सूर्योऽचलःसदा।।२९
ईशमातह र्लदि प्राप्ता नित्यशुद्धा शिवकंरी।
ईशामसीह इति च मन नाम प्रतिष्ठितम। ।३०
इति श्रुत्वा स भूपालो नत्वा तं मलेच्छपूजकम।
स्थापयामास तं तत्र म्लेच्छस्थाने हि दारुणे ।।३१

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड द्वितीय अध्याय)

यह सुनकर ईशामसीह बोले कि सत्य के नष्ट हो जाने पर म्लेच्छ देश के मर्यादाहीन होने पर मैं मसीह यहां आया हूँ। दस्युओ की भयकारिणी विपत्ती को म्लेच्छों से प्राप्त करके मैं मसीहत्व को प्राप्त हुआ हूँ। हे राजन मेरे द्वारा म्लेच्छों में स्थापित धर्म को सुनो-स्नान करो या नहीं, मन को निर्मल करके वैदिक जप को आश्रित करके निर्मल होकर जपे। न्याय सत्यवचन और मन को एकता से मनुष्य ध्यान से सूर्यमण्डल में स्थित ईश्वर को ध्यान से पूजे। वह प्रभु अचल है जैसे कि सूर्य अचल है। ईश्वर के हृदय में नित्य शुद्ध तथा कल्याणकारी मूर्ति प्राप्त होती है, इसलिए ईशामसीह मेरा नाम है। यह सुनकर राजा ने उस म्लेच्छपूजक को वहीं दारुण म्लेच्छ स्थान में स्थापित किया तथा मुहम्मद साहब को (म्लेच्छपूजक को) भविष्य में आने की सूचना भी ईशा ने राजा से दी है।

पुराणों और वेदों में महामद तथा अल्ला विषयक वर्णन

अन्तिम ईशदूत के रुप में महामद को भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व तृतीय खंड एरां तृतीय अध्याय में चित्रित किया गया है। राजा भोज का समय और महामद का समय एक ही था, क्योंकि पृथ्वी को धर्म की मर्यादा से हीन देखकर राजा भोज सिन्धु पार करके अरब जाता है। वर्णन इस प्रकार है:-

एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छ आचार्येण रामन्वितः।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः।।
नृपश्च चैव महादेवं मरुस्थलनिवासिनम।
गंगाजलैश्च संस्नाप्य पन्चगव्यसमन्वितैः।।
चन्दनादिभिरभ्तर्च्य तुष्टाव मनसा हरम।
नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थलनिवासिने।।
त्रिपुरासुरनाशाय बहुमायाप्रवतिने।
म्लेच्छैर्गुप्ताय शुद्धाय सच्चिदानन्दरुपिणे।।
त्वं मां हि किंकरं विद्धि शरणार्थमुपागतम।

उसी बीच शिष्यों की शाखाओं से युक्त महामद नाम म्लेच्छ आचार्य वह्यं आते हैं। राजा भोज मरुस्थल में निवास करने वाले महादेव को गंगाजल से स्नान कराकट पन्चगव्य से युक्त चन्दनादि से पूजकर शिव को मन से सन्तुष्ट किये-हे मरुस्थल में निवास करने वाले त्रिपुरासुरनाशक, अत्याधिक चमत्कारों को जानने वाले, म्लेच्छों से सुरक्षित शुद्ध एरां सत्य, चैतन्य एरां आनंद स्वरुप शंकर जी तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे शरण में उपस्थित अपना दास समझो।

उराच भूपतिं प्रेम्णा मायामद विशारदः।
तब देवो महाराज मम दासत्वमागतः।।
ममोच्छिष्टं स भुन्जीयात् तथा तत्पश्य भो नूप।
इति श्रूत्वा तथा दृष्टा परं विस्मयमायचौ।
म्लेच्छधर्मे मतिश्चासीत्तस्य भूपस्य दारुणे।

राजा भोज के पास स्थित पत्थर की मूर्ति के लिए महामद ने कहा कि वह तो मेरा जूङ्गा खा सकता है जिसे तुम पूजते हो, ऐसा कहकर भोज को वैसे ही दिखा दिया, यह सुनकर और देखकर राजा भोज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसकी आस्था म्लेच्छधर्म में हो गई।

रात्रौ स देवरुपश्च देवरु बहुमायाविशारदः।
पैशाचं देहमास्थाय भोजराजं हि सोऽब्रवीत।।
आर्य धर्मो हि ते राजन सर्वधर्मोत्तमः रमूतः।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारुणम ।।
लिंगच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रूधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम।।
बिना कौलं च एशवस्तेषां भक्ष्या मते मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति।।
तस्मान्मुसजन्तो हि जातयो धर्मदूषकः।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः।।
इत्युक्त्वा प्रययौ देवः स राजा गेहमाययौ।

रात्रि में कोई देवदूत पैशाचदेह धारण करके राजा भोज से बोला कि हे राजन यद्यपि तुम्हारा आर्य धर्म सभी धर्मों से उत्तम है, फिर भी उसी धर्म को पैशाचधर्म नाम से ईश्वर की आज्ञा से स्थापित करुंगा-खतना किया हुआ, चोटी से हीन, दाढ़ी रखने वाला, ऊँची बात कहने वाला या (अज़ान देने वाला) मेरा खास आदमी होगा। शुद्ध पशुओं का आहार करने वाला, कुशों से जैसे संस्कार होता है, वैसा उसका मुसल से संस्कार होगा, इसी से मुसलमान जाति दूषित धर्मों पर दोष लगाएंगी, ऐसा मेरे द्वारा किया गया पैशाचधर्म होगा। यह कहकर देवता चला गया, और वह राजा घर

लौटा।

अहमद या अहमिद् शब्द का इतना महत्त्व है कि ऋग्वेद मं.८, सू.६, १०, अथर्ववेद काण्ड २०,सू.११५, मं.१ तथा सामवेद १५२ वाँ तथा १५०० वाँ मन्त्र में अहमिद् शब्द का प्रयोग है-

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ।
अहं सूर्य इराजनि।।
अहमद का अर्थ प्रशंसक या अभिमानकक्षक।

(भविष्य पु.प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ अध्याय कलिकृतविष्णुस्तुति:)

मैने ही रक्षक और प्रकृति के नियम को चलाने वाले परमेश्वर से तत्वदर्शिता प्राप्त की है। मैं सूर्य के समान प्रकाशित हुआ हूँ। एतदातिरिक्त अल्ला या अल्ला शब्द ऋग्वेद मं.९, सू.६७ मं. ३० में अल्लाय्यास्य परसुर्ननाश तथा ऋग्वेद मं.३, सू.३०, मं.१० में अल्लदृणों वल इन्द्र ब्रजों गो: पुरा हन्तोर्भयमानो के रुप में प्राप्त होता है।

सार्वभौमधर्म एवं उपसंहार

१) हाथ में रखे हुए बेर के समान सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड को देखने वाले परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करना सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म परमेश्वर की सत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकता।

२) उस परमेश्वर को प्रसन्न करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। उस परमेश्वर की बनाई हुई सृष्टि में किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना, सत्य बोलना, दान देना, किये गये उपकार को मानना, निर्धनों की सेवा करना, धर्मों का आदर करना प्रत्येक धर्म का सिद्धान्त है।

३) धर्म के नाम पर होने वाले वाह्याडम्बरों का निराकरण करके, धर्म के सत्य स्वरुप को लोगों के सम्मुख रखना चाहिए।

४) जो जिसको भजते है, वे उसी को प्राप्त करते हैं एक परमेश्वर को छोड़कर, अन्य देवी देवताओं के भक्त अधोगति पाते हैं उसको नहीं पाते।

५) एक ही परमात्मा है, उसके अलावा दूसरा कोई है ही नहीं जिसकी स्तुति की जाय।

६) प्रतिदिन परमेश्वर का ध्यान, भजन तथा नियमानुसार किसी व्रत को एक निष्ट होकर रहना चाहिये।

७) सभी से नम्रतापूर्वक बोलना, किसी का दिल न दुखाना, अच्छा आचरण, हृदय की सफाई एरां निर्मल भावनाओं का होना आवश्यक है।

८) अच्छे मार्ग चलने से कोई आसुरी शक्ति मनुष्य को भटका देती है, अत: अच्छे कार्य में बाधाओं के उपस्थित होने पर भी अच्छे कार्य का परित्याग नहीं करना चाहिए।

९) परमेश्वर की अनन्य भक्ति करनी चाहिए। परमेश्वर की पूजा में उसकी तुलना में किसी अन्य को नहीं रखना चाहिए।

धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों का अवलोकन करने पर यह स्वत: सिद्ध होता है, कि वैदिक ईसाई एरां इस्लाम धर्म के मूल रुप में वैषम्य नहीं है, अपितु परवर्ती धर्मोपदेशकों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ मिश्रण कर लिया है। इससे वास्तविक धर्म का स्वरुप अदृश्य हो गया है। धर्मों में भरी हुई बुराइयों एरां धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों का दूरीकरण तभी है, जबकि प्रत्येक मनुष्य को यह ज्ञान हो जाय, कि वे सभी एक ही परमेश्वर द्वारा बनाए गये एक ही माता-पिता (आदम व हव्यवती) की सन्तान हैं। जब सभी धर्मानुयायियों का परमेश्वर एक है, मानवसृष्टि का आदि पुरुष एक है, बनावट एक है, क्रियाकलाप एक जैसे ही हैं, मानवजाति में स्त्री जाति तथा पुरुष जाति की रचना समान है, तो एक ही माता पिता की सन्तानें आपस में धर्म के तथ्य को न समझाते हुए पारस्परिक कलह धर्म के नाम पर करें, यह क्या परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बात होगी। अत: सब को प्रेम एरां सद्भावना से रहना चाहिए।